ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

भारतीय ग्राफिक कला में कलाकार अनुपम सूद का योगदान

Contribution of Artist Anupam Sood to Indian Graphic Art

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09/2021

रवि प्रसाद कोली
शोधार्थी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

जगदीश प्रसाद मीणा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय प्रिंट मेकिंग में पुरुष कलाकारों का वर्चस्व था और ग्राफिक कला को तकनीकी महारत, शारीरिक शक्ति और सहनशक्ति की आवश्यकता वाला क्षेत्र माना जाता था। भारतीय ग्राफिक कला में पुरूष कलाकार के साथ-साथ महिला छापाकारों के अतुलनीय अग्रणी प्रयास थे, जिन्होंने इस माध्यम के आसपास के मिथकों को चुनौती ही नही दी, बल्की यह भी साबित किया कि उनमें ये सभी विशेषताएं हैं जो कला के स्वरूप को उच्च स्तर तक ले जाएगी। अनुपम सूद भारत की सबसे महत्वपूर्ण ग्राफिक महिला छापाकार हैं, जिन्होंने सफलतापूर्वक अम्लांकन विधि द्वारा स्वअनुभव से अपने इर्द-गिर्द की घटनाओं और अंतरनुभूति को संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त किया और भारतीय ग्राफिक कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान निभाया है। अनुपम सूद के चित्र आकृति मूलक हैं। इनके चित्रों में कुछ उदासी और बेचैनी लिए हुए मानवाकृतियाँ, खामोशी और मौन प्रतिक्रिया से ही अव्यक्त को व्यक्त कर देती हैं। इनके चित्रों में स्त्री-पुरूष आकृतियाँ अनावृत जरूर हैं, लेकिन वे दर्शकों के मन को उत्तेजित करने के बजाय उद्वेलित करती हैं और बार-बार कुछ सोचने को बाध्य करती हैं। कभी वे मुखौटा समेत मानव को तो कभी मनुष्य के जीवन की त्रासदी के भावों को बड़े ही सरलता और कुशलता से अभिव्यक्त करती हैं। अनुपम सूद की छापा चित्र शैली कथात्मक जरूर है लेकिन उन्होंने अपनी कृतियों को अलंकरणात्मक होने से बचाया है। इनके चित्रों की तकनीकी में उत्कृष्टता, लयात्मकता और रहस्यात्मक है। वे अपने चित्रों में नाटकीय ढंग से छाया और प्रकाश को दर्शाती हैं जो आकर्षक और प्रभाशाली प्रतीत होते हैं। इस भारतीय ग्राफिक कला में कलाकार अनुपम सूद के अतुलनीय योगदान के कारण इनको समसामयीक छापाकारो में प्रमुख स्थान मिला हुआ है।

Indian printmaking was dominated by male artists in the first half of the 20th century, and the graphic arts were considered a field requiring technical mastery, physical strength and stamina. Indian Graphic Art had incomparable pioneering efforts by male artists as well as female printmakers, who not only challenged the myths surrounding the medium, but also proved that they possessed all these characteristics that elevate the art form to a higher level. Will take Anupam Sood is one of India's foremost graphic women printmakers, who have successfully expressed their experiences and experiences around them sensitively and have contributed significantly to the field of Indian Graphic Art. Anupam Sood's paintings are morphological. Some of the human figures with sadness and restlessness in his paintings express the latent only through silence and silent reaction. The figures of men and women in his paintings are definitely exposed, but instead of stimulating the mind of the audience, they stir and compel one to think again and again. Sometimes with a mask, she expresses the feelings of the tragedy of human life very simply and efficiently. Anupam Sood's print painting style is narrative, but he has saved his works from being ornamental. His paintings have excellence in technicality, rhythmicity and mystery. She depicts shadows and light in a dramatic way in her paintings that appear to be captivating and impressive. Due to the incomparable contribution of artist Anupam Sood in this Indian graphic art, he has got a prominent place in the contemporary press.

मुख्य शब्दः एक्वाटिंट, ड्राईपॉइंट, अम्लांकन, इन्ग्रेविंग, मुद्रण, इन्टेग्लियों, लिथोग्राफी, उत्कीर्णन, सिल्कस्क्रीन, प्रिंट मेकिंग, छापाकला, और आरेखण आदि।

Keywords: Aquatint, drypoint, etching, engraving, printing, intaglio, lithography, engraving, silkscreen, print making, printing, and drawing, etc.

प्रस्तावना

सम्पूर्ण कला इतिहास में तकनीकी आविष्कारों ने ग्राफिक कला के विकास को रूप और आकार दिया है। प्राचीन मिस्र के लोगों ने अपने विचारों को संवाद करने के लिए ग्राफिक प्रतीकों का इस्तेमाल किया, जिसे चित्रलिपि के रूप में जाना जाता है। मध्य युग के दौरान, पवित्र शिक्षाओं को बनाए रखने के लिए प्रत्येक व्यक्तिगत पृष्ठ की पांडुलिपियों को मैन्युअल रूप से कॉपी किया गया था।

लेखकों ने उपलब्ध पृष्ठों पर चिह्नित वर्गों को छोड़ दिया, जिसमें कलाकारों ने चित्र और सजावट को सम्मिलित किया है।

1450 में, जोहान्स गुटेनबर्ग ने एक यांत्रिक उपकरण का आविष्कार किया, जिसे प्रिंटिंग प्रेस के नाम से जाना जाता है। इस उपकरण ने ग्रंथों और ग्राफिक कलाओं को बड़े पैमाने पर उत्पादन की सुविधा प्रदान की और अंततः मैनुअल ट्रांसक्रिप्शन को पूरी तरह से बदल दिया। औद्योगिक क्रांति के दौरान, पोस्टर ग्राफिक कला का एक लोकप्रिय रूप बन गया था जिसका उपयोग नवीनतम समाचारों के साथ-साथ नए उत्पादों और सेवाओं का विज्ञापन करने के लिए किया जाता था। फिल्म और टेलीविजन के आविष्कार और लोकप्रियता ने आंदोलन के अतिरिक्त पहलू के माध्यम से ग्राफिक कला को बदल दिया। जब 20 वीं शताब्दी में व्यक्तिगत कंप्यूटर का आविष्कार किया गया था, तो कलाकार बहुत तेज और आसान तरीके से छवियों का हेर-फेर और बदलाव करने में सक्षम थे। त्वरित गणनाओं के साथ, कंप्यूटर आसानी से छवियों को फिर से रंगने, पैमाने पर घुमा सकनें और ठीक करने में सक्षम हैं। ग्राफिक कला समतल सतह पर रेखाओं के आरेखण या उपयोग के आधार पर लागू दृश्य कला है, विशेष रूप से सभी प्रकार के चित्रण और मुद्रण में। मुद्रण शब्द आमतौर पर उन कलाओं को संदर्भित करता है जो रंग की तुलना में लाइन या टोन पर अधिक आधारित हैं, विशेष रूप से ड्राइंग और उत्कीर्णन के विभिन्न रूपों पर। आमतौर पर इसमें एक्वाटिंट नक़्क़ाशी, ड्राईपॉइंट उत्कीर्णन, मोनोटाइप, लिथोग्राफी और सिल्कस्क्रीन प्रिंटिंग शामिल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, ग्राफिक कला में सुलेख, फोटोग्राफी, पेंटिंग, टाइपोग्राफी, कंप्यूटर ग्राफिक्स, बुकबाइंडिंग और कंप्यूटर ग्राफिक्स भी शामिल हैं।[1]

समकालीन भारतीय कला जगत में लंबे समय तक कठिन परिश्रम करने के बाद सफल हुई चंद महिला कलाकारों और बड़े बजट को लेकर कला सृजन करने वालों को छोड़ दें तो अब तक महिला कलाकारों और उनकी कलाकृतियों के साथ पूरा भेद-भाव किया जाता रहा है। उनकी कल्पना और विचारों कि तह तक कोई जाने का प्रयत्न नहीं करता, उल्टे हंसी उड़ाते हैं। उन्हें कला समीक्षक तक गंभीरता से नहीं लेते। यद्यपि अब समय काफी बदल रहा है। अंग्रेजी भाषा में कुछ महिला कला समीक्षक लिख रही हैं लेकिन वे कला और कलाकृतियों की तह में नहीं जा पा रहीं। वहीं समकालीन कला सृजन पर नजर डालते हैं तो भली भांति दिख रहा है कि युवा महिला कलाकार निरंतर नवीन और समाज के परिदृश्य और उनकी विरूपित तस्वीर को अपनी कलाकृतियों में अभिव्यक्त करने का जोखिम उठा रही हैं।

कला और कलाकारों को फिल्मों के समान चकाचोंध की दुनिया दिखाने वाला वर्ग (जिसके अंदर अंधेरा ही अंधेरा और अविश्वास भरी दुनिया है वहां प्रेम नहीं है) कला को भी ग्लैमरस के साथ सिद्ध करने के प्रयत्न में लगा रहता है। वहां भावनाओं और भावाभिव्यक्ति का कोई अर्थ नहीं रह जाता। आर्थिक लाभ और प्रसिद्धि के लिए कला का स्तर भी इस युग के चलन और मांग का मुखापेक्षी होता जा रहा है। वहाँ चित्रकला में चटख और चमक-दमक वाले, रंगों के इस्तेमाल को मात्र बेचने और सजावट की सामग्री मान लिया जाता है। ऐसे में छापा चित्रकला कम लोकप्रिय विधा है। क्योंकि वहां चित्रकला के समान छापाकला में रंगों का भरपूर इस्तेमाल नहीं होता। यद्यपि सिल्क स्क्रीन (सेरियोग्राफी) में भरपूर मनचाहे रंगों का इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन इसमें वो बारीकियां, गहराई और लय नहीं आ पाती जो अम्लांकन (एचिंग), लिथोग्राफी (जमाए हुए पत्थर में रेखांकन कर या चित्र बनाकर इंक द्वारा कागज पर छपाई) या काष्ठ छापा चित्र कला में आती है। क्योंकि यह विद्या ज्यादातर तकनीकी कौशल और छापा मशीनों पर आधारित है। अतः ज्यादा कलाकार इस विधा को नहीं अपनाते। लेकिन यह भी सच है की कई मशहूर चित्रकारों ने इस विधा में सृजन कम ही किया है परन्तु उत्कृष्ट कलासृजन किया है। महिला छापा चित्रकारों की बात करें तो देश में बहुत कम छापा कलाकार रही हैं जिन्होंने सहजता और गम्भीरता से इस माध्यम को अपनी कल्पना और भावाभिव्यक्ति के लिए अपनाया है।

समाज विकास की सीढ़ियां चढ़ता गया, सदियों से घर में बंद महिलाएं शिक्षित होती गई। हर दिशा में अपनी रूचि के अनुसार अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम तलाशने लगीं। सफल होने के लिए उन्हें पुरूषों की तुलना में ज्यादा परिश्रम करना पड़ा। अनुपम सूद एक महिला प्रिंट मेकर हैं। उनकी पीढ़ी आज की महिला कलाकारों की तुलना में अलग अनुभवों और अलग तरह के संघर्षों से गुजरी होगी। यद्यपि अभी भी हालात बहुत बेहतर नहीं हैं। स्त्री पुरूष संबंधों पर आधारित उनके चित्र कई बार ठहर कर सोचने को बाध्य करते हैं। उदाहरण स्वरुप, 'शिफ्टिंग हालो' (रंगीन अम्लांकन) सन 1980, 52×67 सें.मी. छापाचित्र में एक ठोस दीवार के पाश्र्व में एक प्रेमी युगल प्रेम में डूबा है। लेकिन चित्र के सामने के भाग में मूर्तिनुमा एक पुरूष आकृति निर्जीव सी पड़ी है। यह चित्र भी कलात्मक और बढ़िया ढंग से संयोजित है।

वर्तमान समय में देश का हर आम आदमी नौकरशाही की दुनिया में व्यस्त है, बहुत मुश्किल है नागरिकों को बुनियादी सुविधाओं को पाना। कभी न मिटने वाली इस त्रासदी को, इससे प्रभावित आदमी के दर्द और विवशता को कुछ चित्रों में अनुपम सूद ने अभिव्यक्त किया है, जिसमें कुछ कठपुतलियों की डोर अनजान हाथों ने थाम रखी है और माईक के सामने उपस्थित हैं। इन चित्रों में

देश, समाज की विरूपित, खोखले परिदृश्य के लक्ष्य को चित्रित किया गया है। यह अनुपम सूद की निर्भिकता ही है। उनके चित्र भावनात्मक रूप से समाज और दैनिक जीवन की घटनाओं को दृश्यमान कर देते हैं ।

अनुपम सूद द्वारा सृजित चित्रों में आभास ही नहीं होता की ये चित्र श्रमसाध्य एचिंग छापा प्रक्रिया की कठिन तकनीकी से छपे हैं। अम्लांकन विधि से छापा प्रक्रिया को प्रमुख माध्यम के रूप में अपनाने के बारे में अनुपम सूद का कहना है कि "मेरे चित्रों के लिए एक शुद्ध और उत्कृष्ट रेखा और गहरी-हल्की रंगतों का अत्यधिक महत्व है। इसके लिए एक्वाटिंट और मिजोटिंट जैसी तकनीकी विधियों का संयोग बहुत सहायक होता है। कोलोग्राफ विधि की तुलना में, जहाँ तेजी से काम करना होता है, धातु -प्लेट पर सिंथेटिक रेजिन से काम करने के कारण प्लेट धीरे-धीरे आगे बढ़ती है।[4]

दरअसल एचिंग प्रिटिंग जैसे मेहनत वाले कला सृजन प्रक्रिया में जिंक धातु की प्लेट पर मनपसंद आकार, आकृतियों को रेखात्मक, टेक्सचर वाली शैली में नुकीले सुईनुमा उपकरण से खुरचकर उकेरते हैं। इसके पश्चात उसे नाईट्रिक एसिड के घोल में कुछ देर तक डुबोते हैं। इसके पश्चात रोलर से प्लेट पर प्रिटिंग इंक लगाते हैं। प्लेट पर कागज रख कर प्रिटिंग प्रेस के रोलर को संचालित कर कई प्रिंट निकालते हैं। जब तक मनचाहा परिणाम न आये। सचमुच सिद्धहस्त कलाकार इस प्रक्रिया में अपने छापा चित्रों में अद्भुत और सुन्दर परिणाम लाते हैं। अनुपम सूद के चित्र भी अनोखे हैं। अम्लांकन के अतिरिक्त उन्होंने ड्राई प्वाइंट, मिजोटिंट, एक्वाटिंट और लिथोग्राफी में भी काम किया है।

भारतीय ग्राफिक कला-परिचय:- "छापाकला" को अंग्रेजी में "ग्राफिक-आर्ट", ग्रीक भाषा में "ग्राफिकॉस" तथा लैटिन भाषा में "ग्राफिकुस" भी कहते है।[3] दृश्य कला की अनेक विधाओं में से चित्र कला की भांति ग्राफिक कला भी एक महत्वपूर्ण विद्या है। जिसमें छापा कलाकार निरन्तर नए-नए प्रयोग करके कला में नवीन सृजन के अवसर प्रदान कर रहे है। "ग्राफी" शब्द के साथ अनेक प्रकार के शब्द जुड़े हुए है जैसे-लिथोग्राफी, सेरीग्राफी, जाइलोग्राफी आदि। "ग्राफी" शब्द के पीछे अवलोकल या पूनरावृत्ति की भावना जुड़ी होती है। वर्तमान समय में ग्राफिक शब्द छापा कला का पर्याय बन चुका है। सर्वप्रथम चीनी वासियों ने पत्थरों के डिजाइनों और शीलाओं से छापांकन किया था जिसकी जानकारी के स्त्रोत प्राप्त होते है। प्रथम राजकीय छापा इंग्लैण्ड में 1435 में छापा गया था। बाद में चीनी व्यवसायिक पटर्यकों के माध्यम से जापान पहुंचा था। जापान में लकड़ी द्वारा छापा 764 ई. में छापा गया था। प्रागेतिहासिक कला में भी इसके नमूने दिवारों, गुफाओं में पाएं गए है। इन्ग्रेविंग प्रकिया हजारों वर्षों पहले "सुमेरिया" में अपनाईगई थी।[4]

भारत में ग्राफिक कला की शुरूआत तो प्रागैतिहासिक काल से ही हो गई थी परन्तु हम समकालीन भारतीय कला की बात कर रहे है तो इसकी इसकी शुरूआत तो 1905 में बंगाल में पुनर्जागरण काल से मानी जा सकती है। इस आन्दोलन में मुख्य भूमिका अवनिद्रनाथ टैगोर ने निभाई थी। गगेन्द्रनाथ टेगौर, नन्दलाल बोस, रविन्द्रनाथ टैगोर आदि ने इस आन्दोलन को आगे बढाया था इन कलाकारों ने ग्राफिक कला में कार्य कर अपनी पहचान बनाई थी।

प्रारम्भिक काल में मानव ने सर्वप्रथम ध्वनि संकेतों द्वारा अपने विचारों का आदान प्रदान किया था। लिपि का विकास कुछ इस तरह से हुआ-चित्रात्मक लिपि, संकेतात्मक लिपि, भावात्मक लिपि, ध्वन्यात्मक लिपि। भारत में लिपि के प्रारंम्भिक प्रमाण सिन्धु लिपि के पश्चात भारत में 400 ई. पू. से 350 ई. पू. में ब्राह्मी के प्रमाण सम्राट अशोक के शिलालेखों में मिलते है। ब्राह्मी लिपी विश्व की सबसे प्राचीनतम लिपि मानी जाती है। ब्राह्मी लिपि से देवनागरी लिपि का विकास हुआ।

प्रारम्भिक मुद्रण काल- भारत में प्रारम्भिक पुस्तकों का मुद्रण "लेटरप्रेस" द्वारा गुटैवबर्ग के चल टाइपों के अभिर्भाव के लगभग 100 वर्षों के पश्चात गतिशील (चल) टाइपों से किया गया था। भारत में मशीनी (यांत्रिक) मुद्रण का प्रारम्भ 1556 ई. में हुआ था। पुर्तगालियों द्वारा प्रथम मुद्रण मशीन गोवा के सेन्टपाल कॉलेज में लगाई गई थी। सन् 1967 में भारतीय देवनागरी लिपी का मुद्रण यूरोप में प्रारम्भ हुआ अर्थात देवनागरी के टाइपों का निर्माण यूरोप मे ही हुआ था। भारत में दूसरी मुद्रण मशीन 1674 ई. गुजरात और 1712 ई. में मद्रास में लगाई गई थी।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने प्रशासनिक कार्यों के लिए प्रथम छापाखाना बंगाल में स्थापित किया था। भारत में प्रथम समाचार पत्र 1780ई. एक अंग्रेज "जेम्स अगस्त हिक्की ने कलकत्ता से भारत में "हिक्कीज" बंगाल गजट" का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। हिन्दी भाषा का प्रथम समाचार पत्र "उदत्त मार्तण्ड" का प्रकाशन 1826ई. में कोलकाता से किया गया था। 1820 ई. में कलकत्ता में भारत की प्रथम लिथोग्राफी प्रेस की स्थापना की गई। कलकत्ता में लिथोग्राफी द्वारा मुद्रण 1822 ई. में प्रारम्भ किया गया था। प्रारम्भ में इस प्रेस से नक्शे मुद्रित किये गये थे। बिहार में 1826 में लिथोग्राफी प्रेस की स्थापना हुई थी। कला व मुद्रण दस्तकारी प्रशिक्षण के लिए भारत में अनेक कला विद्यालय खोले गये है। स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड इण्डस्ट्री, मद्रास-1850, स्कूल ऑफ इण्डस्ट्रीयल आर्ट, कलकत्ता-1854, सर. जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई-1857, राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर-1857, कला विद्यालय, लाहौर-1875, और शांतिनिकेतन, कलकत्ता-1901 आदि है।

विदेशी प्रिंटों से प्रभावित प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार राजा रवि वर्मा ने 1894 में मुम्बई में अपने चित्रों में प्रिंट बनाने के लिए ''राजा रवि वर्मा फाइन आर्ट लिथोग्राफी प्रेस'' की स्थापना की थी। सन् 1903 में समाचार पत्र ''द स्टेट मैन'' में प्रथम बार विज्ञापन डिजाइन में अर्धतान (Half Tone) चित्र मुद्रित किये गये थे। 1905 ई. में भारत में प्रथम विज्ञापन एजेन्सी ''दत्ताराम एडवर्टाइजिंग'' की स्थापना बी दत्ताराम द्वारा मुम्बई में की गई थी। ग्राफिक कला के प्रारंभिक कलाकारों में सोमनाथ होर, कवंल कृष्ण, कृष्णा रेड्डी, जगमोहन चोपड़ा, सनतकार, अनुपम सूद आदि रहे है।

अनुपम सूद की कला यात्रा

अनुपम सूद का जन्म पंजाब के होशियारपुरा में 15 जनवरी 1944 को एक छोटे से परिवार में हुआ था। वर्तमान समय में नई दिल्ली के बाहरी इलाके के मंडी समुदाय में निवास करती है। सूद का जन्म वेसे तो पंजाब में हुआ था परन्तु उन्होने अधिकांश युवावस्था हिमालय प्रदेश की पूर्व ब्रिटिश ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला में बिताई थी। एक रूढिवादी परिवार से आने के कारण उन्होने अधिकांश समय शादी, घर गृस्थी की बजाय अकादमीक करियर बनाने व कला के नये-नये उपादानों को खोजने में लगाया है।[5]

अनुपम सूद ने सन 1962 से 1967 तक दिल्ली के ललित कला महाविद्यालय से कला में डिप्लोमा उसी दशक के दोरान प्राप्त किया जब सोमनाथ होर महाविद्यालय के प्रिंटमेकिंग विभाग को फिर से संघठित और पुनर्जीवित कर रहे थे। 1971 -72 तक ब्रिटिश काउंसिल से छात्रवृत्ति प्राप्त की। तत्पश्चात स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट, लंदन से प्रिंट मेकिंग की शिक्षा ग्रहण की। शिक्षा पूरी करने के बाद वे 'दिल्ली स्कूल ऑफ आर्ट' में ही अध्यापन करने लगीं। कला विद्यालय से डिप्लोमा प्राप्त करने के तुरन्त बाद जगमोहन चोपडा द्वारा गठित ग्रुप-8 के संस्थापक सदस्यों में शामिल हुयी। आप इस ग्रुप में सबसे कम उम्र की कलाकार थी। यह ग्रुप भारत में ग्राफिक कला और प्रिंटमेकिंग के बारे में जागरूकता फेलाने को समर्पित था।[6]

ग्रुप-8 में जुडने के उपरान्त उनका कला संसार जीवन्त होकर नई उच्चाईयों को छुने लगा। उनके छापाचित्रों में व्यक्ति की मानसिक जकडन व सफलतापूर्वक अम्लांकन विधि द्वारा स्वनुभव से अपने इर्द-गिर्द की घटनाओं और अंतरनुभुति को संवेदनशीलनात्मक अभिव्यक्तियों में व्यक्त किया है। कलात्मकता की दृष्टि से उनकी कृतियों में एक अजिब सा ठहरावपन और ठंडेपन का अहसास करवाती हुई प्रतित होती है। उनके चित्रों की मानवआकृतियाँ खामोशी और मोन प्रतिक्रिया में भी अव्यक्त को व्यक्त कर देती है। अनुपम सूद एक आकृति मूलक ग्राफिक कलाकार है। जब वह महाविद्यालय के तृतीय वर्ष की पढाई कर रही थी तब उनका ग्राफिक कला से प्रथम बार परिचय हुआ, लगातार इसी क्षेत्र में कार्यरत रहकर इन्होने ग्राफिक कला को पूर्णरूप से अपनाकर अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। बहुत लम्बे समय से वर्तमान तक वह इसी क्षेत्र में कार्यरत है।

सूद का प्रारम्भिक कार्य कोलोग्राफ माध्यम में किया गया है। यह उस समय एक नविन माध्यम था और यह अधिक प्रचलन में भी नही था। आप कोलोग्राफ माध्यम की कलाकृतियों में विभिन्न प्रकार कि वस्तुओं ओर सतहों से टेक्चरस को उठाकर कलात्मक रूप प्रदान करने में सक्षम रही है।

अनुपम सूद के शब्दो में ''कार्ड बोर्ड की अपनी प्रकृति होती है। इस माध्यम में कार्डबोर्ड की सतह से कुछ ऊपर उठाकर भिन्न-भिन्न प्रकार के टेक्चरर्स से युक्त रिलिफ प्लेट तैयार करने की अनगिनत सम्भावनाऐं विद्यमान होती है जिससे बहुत कम समय में विभिन्न प्रकार की कोलोग्राफ प्लेट तैयार की जा सकती है। इस प्लेट को तेयार करने में बहुत कम समय लगता है। क्योंकि धातु प्लेट पर कार्य करना एक कठोर माध्यम है जिस पर एचिगं कार्य करने में बहुत अधिक समय लगता है।''

अनुपम सूद इन्टेग्लियो के बारे में बताती है की '' इन्टेग्लियों माध्यम एक धातु कि प्लेट पर कठोर माध्यम है जिसमें धातु कि प्लेट में पर एकदम सुक्ष्म रेखाओं द्वारा आकृति बनाना और टोनल का उतार-चढाव अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। जैसे की एक्वाटिंट व मेजोटिन्ट में होता है। धातू पर कार्य करते समय कलाकार सोच समझकर अपने कार्य को धीरे-धीरे आवश्यक्तानुसार बढा भी सकता है। धातु प्लेट पर कार्य करते समय कलाकरा को बहुत से नियमों का पालन अनुशासन के साथ करना अत्यन्त आवश्यक होता है। सुद स्वयं के अनुशासनात्मक चरित्र के व्यक्तित्व की धनी होने के कारण यह माध्यम उनके कार्य से बहुत अच्छे तरिके से मेल खाता है। आपके प्रारम्भिंक कार्ड-बोर्ड के कार्य

देखने से यह बात तो स्पष्ट हो जाती है की इस माध्यम को सूरूचिपूर्ण ढंग से प्रयोग करते हुये सवेंदनशीलनात्मक अभिव्यक्ति में अपनी कलाकृतियों की रचना की है। जो उनके चित्र ''सह अस्तित्व'' और जीवन एक क्रान्ति में स्पष्ट दिखाई देता है।

अनुपम सूद की प्रमुख कलाकृतियाँ

कलाकार अनुपम सूद ने अपने जीवन काल में ग्राफिक तकनीक में अनेकों कलाकृतियों की रचना थी, फिर भी परिचय के रूप में इनकी कुछ प्रमुख कलाकृतियाँ निम्नलिखित प्रकार से है।

''सह अस्तित्व'' छापाचित्र में मानव आकृति के शारीरिक गठन को सरल और साधारण आकार में सुव्यस्थित तरिके से बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। इस चित्र में बच्चों जैसी क्रीडात्मकता है आकारों में अकृत्रिमता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। रेखांकन से हटकर चार के स्थान पर इस युगल आकृति में छः पैर बनाये गये जिसे एक टाइम फ्रेम में बनाया गया है। इस कलाकृति में अस्तित्व की जकडन और कसमसाहट को बहुत ही सुन्दर और प्रभावशाली ढंग से उत्किर्ण किया गया है। इस आकृति में एक तरफ लाल रंग का खाका तथा दुसरी ओर पृष्ठिभूमि के गहरे टेक्सचर, इस युगल आकृति को बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इस आकृति में एक अनदेखी-अनजानी सी ऊर्जा प्रतित हो रही है जो घनिभूत होकर इस चित्र के सौन्दर्य को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

सूद द्वारा चित्रित ''जीवन एक क्रान्ति'' चित्र सन 1968-69 के बीच चित्रित किया गया था। इस चित्र में अनुपम सुद ने टेक्सचर को बहुत ही आकर्षक ढंग से इस्तेमाल किया है। हल्के रंगो की पारदर्शिता से, चारों तरफ कोनो में छोडा गया सफेद स्थान अपने आप में एक प्रभावशाली संयोजन का निर्माण कर रहा है। आकृतियों को इस प्रकार से अंगिकृत किया गया है कि वे पूर्व में निश्चित एक योजना का अंग दिखाई पडती है। इस समय के उनके कोलोग्राफ और लिथोग्राफी माध्यम के चित्रों की आकृतियाँ साधारण सी दिखाई देती है परन्तु उनकी संरचना एकदम समतल ही है। उनमें आयतन का आभास बिल्कुल भी दृष्टिगत नही होता है। उनके द्वारा बनाये गये चित्र ''अंडा'' जो कि रंगीन लिथोग्राफी चित्र है ओर एक अन्य चित्र ''तैरता अस्तित्व'' में यह बात पूर्णतः स्पष्ट दिखाई देती है। अनुपम सूद ने अपने छापाचित्रों में नोकरशाही की शक्तियों पर अठखेलियाँ करते हुए आम आदमी की विवशता को बखुबी अभिव्यक्त किया है। इस चित्र में सूद ने समय की स्थितीयों और अवस्थाओं पर तीखा कटाक्ष किया है।

सूद ने बाद में 1971 से 1972 तक स्लेड स्कूल ऑफ फाइन आर्ट, यूनिवर्सिटी, लंदन में प्रिंट मेकिंग का अध्ययन किया। स्लेड से लौटने के बाद अनुपम सूद ने नक़्क़ाशी के माध्यम से, कपड़े पहने और बिना कपड़े पहने मानव आकृतियों की खोज में गहन रुचि विकसित की। अनुपम को पुरुष और महिला दोनों की कामुकता और पहचान से प्रेरणा मिली। सूद की कला में सामाजिक मुद्दों पर चित्र स्पष्ट रूप से शायद ही कभी पाए जाते हैं, और उनके आंकड़े अक्सर आत्म-अवशोषित और चिंतित होते हैं। हालांकि, प्रतीकात्मकता और रूपक के माध्यम से सूद सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषयों के साथ संलग्न हैं, और लिंगों के बीच अंतः सम्बन्धो के मूडी चित्रण उनके काम में एक पसंदीदा विषय हैं। सूद के चित्रों की नक़्क़ाशी जस्ता प्लेटों के उपयोग से की जाती है, यह एक कठिन माध्यम है जिसके लिए धैर्य और सटीकता दोनों की अत्यन्त आवश्यकता होती है।[8]

चित्र– डायलॉग

सूद की कलाकृतियों के सबसे प्रसिद्ध निकायों में से एक, "डायलॉग सीरीज़", परिपक्व, मौन, स्वीकृति के मूड के माध्यम से विभिन्न लिंगों के लोगों के बीच मानव संचार को व्यक्त करता है। "संवाद श्रृंखला" मानव एकता को अंतरंग और गैर-मौखिक के रूप में जोर देती है। अनुपम सुद ललित कला महाविद्यालय में छापाकला विभागाध्यक्ष रही है। आपके छापाचित्रों में मुख्यत संयोजन को क्षैतिज और अग्रभूमि में विभक्त करके कुशल प्रयोगो से उनके डिजाइन के प्रति गहरी समझ का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। आपने मूर्त आकृतियों को ही अपनी कलाकृतियों में

अभिव्यक्ति के लिए स्थान दिया है। उनके कार्यों को यदि बार-बार गौर करके देखते है तो कुछ आकृतियाँ और बिम्बों को अनेक स्थानो पर देखा जा सकता है। जिनमें वास्तुशिल्पीय रख-रखाव, दीवारों, कमरे, फूल-पत्तियों आदि का चित्रांकन उनकी कलाकृतियों में अनेक बार देखने को मिलता है। कहीं-कहीं तो इस प्रकार की संरचना एक रहस्यात्मक वातावरण पैदा कर देती है। कुछ ऐसे ही अहसासों का सपुंजन है उनका वह खासा बडा छापाचित्र संरचना जिस पर उन्हे सन 1973 में राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया था।

अनुपम सूद के सन्दर्भ में एक प्रश्न यह उठ सकता है कि उन्होंने धातु प्लेट को ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम क्यों चुना है इस विषय पर उनका मानना है ''मेरे लिए एक शुद्ध और उत्कृष्ट रेखा और गहरी-हल्की रंगतो का अत्यधिक महत्त्व है। इसके लिए एक्वाटिंट और मैजोटिंट जैसी तकनीकी विधियों का संयोग बहुत सहायक होता है। कोलोग्राफ विधि की तुलना में, जहां तेजी से काम करना पडता है, धातु प्लेट पर सिंथेटिक रेजिन से काम करने के कारण प्लेट धीरे-धीरे आगे बढती है। इसमें एक खास योजना के अंतर्गत काम करते हुए कलाकार को पूर्व-निर्धारित परिणामों को पाना होता है''।[9]

आपके चित्र विषय बहुत ही संवेदपशील ढंग से निर्मित किये गये है साथ ही छापा चित्रों की प्रिंटिंग गुणवर्ता बहुत ही उच्च कोटी की है। आपने यर्थातवादी चित्रण को अपनाकर उसकी बारीकियों के साथ सुव्यवस्थित तरिके से अलंकृत कर चित्रित किया है। आपके चित्रण का विषय सामाजिक जीवन, आम जिन्दगी और वातावरण के साथ जुडा हुआ है साथ में मनोवैज्ञानिकता के तत्वों को अपनी कलाकृतियों में स्थान प्राप्त हुआ है। बायोग्राफी ऑफ ए क्राइम, वे टू यूटोपिया, शिफटिंग होलो, होमेज टू मेन काइट आदि चित्रों मे इसे बखूबी देखा जा सकता है।

अपनी रचनाओं में सूद ने फोटो एचिंग के साथ स्क्रीन प्रिंटिंग का उपयोग बडे ही सुन्दर एवं कलात्मक ढंग से किया है और उस पर रेजिन पाउडर द्वारा हल्के एंव गहरे एक्वांटिंट के बाद शरीर का 3डी रूप उभारने के लिए स्क्रेपर के प्रयोग द्वारा आकृतियों में सवेंदनात्मक उपस्थिति को उजागर कर देती है।

चित्र–ट्रिब्यूट

'ट्रिब्यूट'' नामक चित्र को अनुपम सूद ने केवल चार रंगो का प्रयोग कर छापा है जिसमंे उन्होने अलग-अलग रंगो के लिए अलग-अलग प्लेटो का प्रयोग किया है। इस कलाकृति में तीन चेहरों को डमी के रूप में रूपांतरित किया गया है जिसमें एक मुख्य चेहरा नजर आ रहा है। इस चेहरे के सामने कुछ गुलाब के पुष्प रखे हुए दिखाई दे रहे है तथा गले में फुलों की माला डाली गई है जिसमें दिखाऐ गए फुल हजारा के प्रतित हो रहे हैं। सम्पूर्ण दृष्य पर एक नजर डाले तो ऐसा प्रतित होता है जैसे किसी को श्रधांजली दी जा रही है। इस छाया चित्र में छाया-प्रकाश का प्रयोग सुन्दरता से नाटकियता के साथ किया गया हैं जिससे आकृति में त्रिआयामी प्रभाव दिखाई दे रहा है। इस कलाकृति को ऐसे तो कलाकार ने एक धरातल पर चित्रित किया है परन्तु इसके चित्रांकन में ऐसा कलात्मक माध्यम अपनाया गया है, जिससे कलाकृति दो अलग-अलग भागो में दिखाई दे रही हैं। तीन मुखाकृतियों में से रंगीन कलाकृति को अलग भाग में तथा ब्लेक एण्ड वॉइट आकृति को अलग भाग में चित्रित किया गया है। चित्र संयोजन और रंगो का चयन कलाकार ने ऐसा किया है कि सम्पूर्ण कलाकृति में सोन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति पूर्ण रूप से निखरकर सामने आई है।

चित्र–डार्लिंग गेट मी ए बेबी

मध्य हिस्से में एक समाचार पत्र की कतरन लगी हुयी है जिस पर " टैस्ट ट्यूब बेबी" तथा "सैक्स एंड साइंस" लिखा हुआ है। इस पेपर कतरन के एक साइड में दो अन्य व्यक्तियों को भी दिखाया गया है। इस चित्र के द्वितीय भाग में नग्न अर्द्धनग्न महिलाओं को चित्रित किया गया है जिसमें एक महिला फोन पर किसी से सम्पर्क या वार्तालाप कर रही है। एक अन्य महिला दुसरी महिला का हाथ थामकर उसे सहारा देने की कोशिश कर रही है। सम्पूर्ण संयोजन ब्लेक रंग की अनेक तानो को प्रयोग करके चित्रित किया गया है। सूद ने महिला आकृतियों को हल्की गहरी रेखाओं से उभारकर एक्वाटिंट के प्रभावो द्वारा प्रमुखता देकर एक आकृषक नाटकियता को साकार करने में सफलता प्राप्त की है।

चित्र–ऑफ वॉल्स

उनके अन्य छापाचित्र फोटोग्राफी अम्लाकंन में ऑफ-वॉल्स" है। 'ऑफ वॉल्स' अनुपम सूद द्वारा लिथोग्राफ में एक ग्राफिक प्रिंट है जो फोटोग्राफिक का मिश्रण है। इस चित्र को सूद ने सन 1982 में चित्रित किया था। इस चित्र में एक महिला साधारण सी वेशभूषा पहने हुए गुमशुम सी सहमी अवस्था में मृत व्यक्ति के पैरो के पास पत्थर के ऊपर बैठी है। उसके आगे ईंट की दीवार दिखाई गई है, जिस पर जीवंत गतिविधियों के चित्र याद दिलाने के लिए बेहोश हैं। दर्शक एक बार इन जीवंत गतिविधियों का हिस्सा थे जब तक कि दीवार को अलग करने के लिए नहीं बनाया गया था। इस मृत व्यक्ति के सम्पूर्ण शरीर को नही बनाकर के बस उसके पैरो को ही चित्रित किया गया है परन्तु इन पैरो का चित्रण अपूर्ण होने पर भी पूर्णता का अहसास करवा रहे है। महिला को सफेद साडी पहने दर्शाया गया है जिसमें चैहरे वाले स्थान पर चैहरा नही दिखाकर उस स्थान पर एक गहरा कालापन भर दिया गया है। इस कालेपन से उस औरत के दुःख की गहन कालिमा साफ नजर आ रही है। इस चित्र संयोजन में मृत्यु के समय होने वाला खालीपन का अहसास, सुनापन, घोर शांति का माहोल बिलकुल साफ दिखाई देता है। मृत्यु के समय के वातावरण को चित्रित करने में कलाकार ने पूर्ण रूप से सफलता हाँसिल की है।

चित्र–त्रिमूर्ति

अम्लाकंन की पृष्ठभूमि बडी ही स्वभाविक नजर आ रही है। उनके छापा चित्रों की मुख्य बात यह है कि वे पृष्ठभूमि को एक पर्दे के समान उपयोग करती है जैसे रामलीला या कृष्णलीला की नाटकीय अभिव्यक्ति में विशाल भवनों और वनकुंजो के दृश्यों के पर्दो का उपयोग, पात्रों की मंचीय गति और क्रियाओं के प्रभावों को उभारने में किया जाता है। अनुपम के कार्य में भी ये प्रयोग बार-बार दिखाई देते है। आपके एक छापाचित्र ''त्रिमूर्ति'' जिसका कार्यकाल सन 1982-83 रहा है। इस आकृति में संयोजन मूर्तिशिल्पों से विशाल सिरों द्वारा किया है। इस चित्र कि अग्रभूमि में बाई तरफ एक पुजारी और शिवलिंग को तथा दाँयी तरफ एक गौ-माता आदि आकारों द्वारा परिवेशगत सच्चाई तथा पोराणिक यर्थात में परस्पर तालमेल दिखाया गया है। अनुपम सूद की छापा कलाकृतियाँ, कला संसार में अपनी अलग ही पहचान रखती है। इन्होने अपनी कलाकृतियों में एक अद्भूत और रहस्यात्मक वातावरण को दर्शाने का प्रयास किया है जिसमें उन्होंने पूर्ण सफलता प्राप्त की है। है। इनके चित्रों में छाया-प्रकाश का नाटकीय रूप से प्रयोग हुआ है। आकृतियों की लयात्मकता में एक अद्भूत निस्तब्धता है। आप चित्रों में ऐसे अनेक नाटकीय प्रभाव का प्रयोग खूब संयम एवं संतुलन के साथ करती है।

अनुपन सूद कि अन्य प्रमुख कलाकृतियाँ

शिफ्टिंग हॉलो, ऑटम, डिनिंग विद एग, ओलम्पिया, व्यक्तित्व, वचनों और वचनों के बीच, कैंसर आदि है।

प्रदर्शनियाँ

कलाकार अनुपम सूद द्वारा हाल ही में लगाई गई प्रदर्शनीयों में एनजीएमए, नई दिल्ली-2014 में एक समूह प्रदर्शनी में उनकी ''सेलिब्रेटिंग इंडिजिनस प्रिंट मेकिंग कलाकृति को शामिल गया था। विलियम बेंटन कला संग्रहालय, कनेक्टिकट विश्वविद्यालय, यूएसए, 2013 में ''अभिसरण'', ''स्क्वायर इज जस्ट ए शेप'' कला चाइनामुन और अक्षांश-28 द्वारा हांगकांग दृश्य कला केंद्र में 2013 में प्रस्तुत किया गया। 2011 में अक्षांश-28 पर ''प्रीपरेटरी एसेर्शनः नोट्स फ्रॉम स्केच बुक्स'' शीर्षक से एकल प्रदर्शनी और एक समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। उनकी एक कलाकृति ''पाइप ड्रीम्स'' को 2012 में हांगकांग विजुअल आर्ट सेंटर में कला चाइनामुन और अक्षांश-28 द्वारा प्रस्तुत किया गया और इस सेंटर पर 2011 में इनकी अन्य कलाकृति ''द एनुअल'' को प्रदर्शीत किया गया था। अनुपम 'द इंडिया आर्ट समिट 2011' और 'द इंडिया आर्ट' में अक्षांश-28 बूथ का भी हिस्सा थी जो कि एक सामूहिक ऑनलाइन कला मेला है। अक्षांश-28 ने कलाकार अनुपम सूद के कार्य का प्रतिनिधित्व कर 'द इंडिया आर्ट फेयर' प्रदर्शनी में 2012, 2013, 2014 और 2015 में उनके कार्य को प्रदर्शीत किया। उन्होने 2016 में अक्षांश-28 पर एक पेंटिंग कार्यशाला 'कलर योर वर्ल्ड' का आयोजन भी किया।

सूद ने 1978 से 2003 तक कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली की फैकल्टी में ही कार्य किया हैं। 2003 के बाद उन्होंने भारत के अलावा कोरिया और यूएसए में 12 बार एकल प्रदर्शनीयाँ आयोजित की हैं। कुछ अन्य एकल प्रदर्शनियां 'द अदर सेल्फ' हैं, जिन्हें आर्ट हेरिटेज, नई दिल्ली द्वारा श्रीधरणी गैलरी, नई दिल्ली में 2010 में प्रस्तुत किया गया था। अनुपम सूद ने 'ए रेट्रोस्पेक्टिव', पैलेट आर्ट गैलरी, नई दिल्ली में 2007 में, 1997 में साक्षी गैलरी, मुंबई में, कला विरासत, नई दिल्ली और पुसान, कोरिया में 1996 में, 1995 में 'फोर आर्टिस्ट्स' सिमरोज़ा आर्ट गैलरी, मुंबई के अलावा और भी बहुत स्थानों पर अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया है।[11]

1968 से 1996 तक, उन्होंने 34 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लिया, जिसमें 'महिला, अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी', न्यूयॉर्क में 1975 में, फ्लोरेंस त्रिनाले और तीसरा, चोथवां और पांचवां त्रैवार्षिक

बिनाले वालपराइसा में 1979-81 चिली में, इंटरनेशनल प्रिंट बीनाले, लजुब्लजाना में 1981-83 में, पांचवां त्रैवार्षिक भारत और स्विट्जरलैंड में, छठा नॉर्वेजियन प्रिंट बीनाले में 1982 में, ब्रिटिश प्रिंट बीनाले, ब्रैडफोर्ड में 1985 में 'भारत में प्रिंट मेकिंग, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में 1986 में, आठ अंतर्राष्ट्रीय प्रिंट बीनाले, बर्लिन में 1987 में, इंटरनेशनल प्रिंट बीनाले, भारत भवन, भोपाल में 1995 में। उन्होंने गैलरी एस्पेस, नई दिल्ली की ओर से 'मिनी प्रिंट -96' प्रदर्शनी में क्यूरेटर का कार्य किया।

कार्यशालाएं

अनुपम ने लगभग पाँच प्रिंटिंग कार्यशालाओं में भाग लिया, जिनमें से एक पॉल लिंगरेन के साथ सन 1970 में और कैरल समर्स के साथ सन 1974 में आयोजित की गई। सन 1989 में उन्होंने फुकुओका कला संग्रहालय, जापान में एशियाई देशों की प्रिंट मेकिंग कार्यशाला में हिस्सा लेकर के भारत का प्रतिनिधित्व किया। न्यूयॉर्क और बर्कले में सन 1996 में पेशेवर कार्यशालाओं में काम किया और ओटावा, कनाडा में सन 1990 में एक प्रिंट मेकिंग कार्यशाला भी आयोजित की।

ग्रुप-8 (1968) के संस्थापक सदस्यों में से एक के रूप में, अनुपम ने अपने प्रिंट मेकर सहयोगियों के साथ प्रिंट मेकिंग को एक स्वतंत्र, अभिव्यंजक कला के रूप में बढ़ावा देने और बनाए रखने के लिए इस एसोसिएशन के माध्यम से काम किया। उनके काम को व्यापक रूप से प्रदर्शित करने के साथ बहुत सराहा भी गया है। दुनिया भर में एक दर्जन से अधिक एकल शो के अलावा, आपने अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, कोरिया, स्विट्जरलैंड और अन्य देशों के शहरों में कई समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया है। सूद का काम द नेशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली, द विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूज़ियम, लंदन, द पीबॉडी म्यूज़ियम, यू.एस.ए. और ग्लेनबारा आर्ट म्यूज़ियम, जापान के संग्रह में है।

पुरस्कार

अनुपम सूद ने 1969 और 1995 के बीच 19 बार पुरस्कार जीते हैं। 1990 में, सेंटर फॉर इंटरनेशनल कंटेम्परारी आर्ट (सीआईसीए), न्यूयॉर्क ने उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रिंट मेकिंग में एक अध्ययन और यात्रा फेलोशिप से सम्मानित किया, और उन्होंने भारत के राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक जीता। महिला अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, नई दिल्ली 1975 में पट्टिका, उसी वर्ष अंतर्राष्ट्रीय प्रिंट बिनाले, भारत एआईएफएसीएस में विशेष पुरस्कार प्राप्त किए है। उन्होंने प्रिंट मेकिंग में अपनी उत्कृष्टता के लिए कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। उसने कनाडा और जापान में वर्कशॉप भी आयोजित की हैं। वह नई दिल्ली में रहती है और काम करती है।

भारतीय ग्राफिक कला में योगदानः-

हमारी सभ्यता व संस्कृति के आरम्भ से वर्तमान समसामयिक युग में भिन्न-भिन्न कला शैलियों एवं माध्यमों के समक्ष ही ग्राफिक भी मानवीय संवेगो, विचारों, अनुभूतियों एवं मानशीक अभिव्यक्तियों को सशक्त रूप से कलाभिव्यक्ति प्रदान करने का प्रमुख साधन रही है। ग्राफिक कला अपने क्षेत्र में निरन्तर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते हुए प्रबल ऊचाँइयों को हाँसिल करके विश्व स्तर पर ग्राफिक कला के इतिहास में प्रमुख कलाभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार कर ली गई थी। आधुनिक समय ने मानव को काफी सोच-विचार व चितंन के लिए बाध्य कर दिया हैं। अतः समसामयिक भारतीय कला माध्यमों के प्रकरण में यदि हम ग्राफिक कला की बात करे तो हम इस नतिजे पर पहुचेंगें कि प्रागैतिहासिक युग से समसामयिक समय तक भारतीय कला यात्रा में ग्राफिक कला का क्षेत्र दिन प्रतिदिन बहुत बढने के साथ व्यापक हो चुका है। ग्राफिक कला में समय-समय पर नये-नये प्रयोग होते ही रहते है। वर्तमान में इस समय इस कला के क्षेत्र में बहुत से कलाकार कार्यरत है, जिनमें एक महिला कलाकार अनुपम सूद हैं जिन्होने ग्राफिक कला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जगमोहन चौपड़ा के ग्रुप-8 की संस्थापक सदस्य रही कलाकार अनुपम सूद ने अपने आस-पास के विषयों को अपनी कलाकृतियों में स्थान देकर भारतीय कला संसार को जीवंत करने मेँ महत्त्वपुर्ण योगदान दिया है। सूद ने छापाचित्रों में मानवीय चेतन की कसमसाहट के साथ वर्तमान समय की विसंगतिपूर्ण स्थितीयों का विश्लेषणात्मक माध्यम मेँ भावाभिव्यक्ति की हैं। यह एक ऐसी उदास और गुच-चुपी वाली प्रतिक्रिया है जो मानवीय चेहरे पर साफ दिखाई देती है। इन्होने अपनी कॉलेज शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त ग्राफिक कला को पूर्ण रूप से आत्मशात कर लिया था।

अनुपम सूद ने सन 1994 में लिटिल थियेटर ग्रुप दिल्ली की कला दीर्घा में सर्वप्रथम एकल प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें उन्होने ग्राफिक कला के एक नविन शिखर को प्राप्त किया। इस प्रदर्शनी में उन्होने नया प्रयोग कर कुछ कलाकृतियाँ सृजित की जिनकी शैली सोमनाथ होर के पल्प छापा या कृष्णा रेड्डी के विस्कोसिटी छापों से पूर्णतः भिन्न प्रक्रिया है। यह एक आयमी प्रक्रिया थी जिसमें उन्होने अपनी पुरानी अलग-अलग कलाकृतियों के पीस काट-फाडकर, तोड-मरोडकर, आडे-तिरछे तरिके कागज पर चिपका कर उभार के साथ सुस्पष्ट तरिके से संयोजित कर त्रिआमी प्रभाव उत्पन्न किया है। अन्य कुछ कार्यो में सूद ने वास्तविक सामग्री को चिपका कर अपनी कलाकृतियों को त्रिआमी प्रभाव उत्पन्न किया है। एक आकृति में एक व्यक्ति के मुंह में उन्होने वास्तविक सिगरेट का टुकडा चिपका दिया था। इस तकनीक के अलावा सूद ने कोलोग्राफ, कार्डबोर्ड आदि माध्यमों में अपना कार्य पूर्ण किया। आपने कलाकृतियों में टेक्सचर्स का बहुत प्रयोग किया है। आपकी प्रमुख कलाकृतियों में है 'जीवन एक क्रान्ति', 'अस्तित्व', 'ऑफ वॉल्स', 'ट्रिब्यूट' आदि। आपको ''संरचना'' नामक कलाकृति

पर सन 1973 में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अनुपम अपने विषयों के प्रति प्रारम्भ से ही संवेदनशील रही है जिससे आपके छापा चित्रों के प्रिंट उच्च कोटी के रहे है।

आपने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किये है। सन 1970 से 1980 के मध्य दिल्ली के ग्राफिक कलाकारों ने भारतीय ग्राफिक कला के क्षेत्र में मुख्य योगदान दिया है। सूद ने 1978 से 2003 तक कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली की फैकल्टी में ही कार्य किया हैं। 2003 के बाद उन्होंने भारत के अलावा कोरिया और यूएसए में अनेकों एकल प्रदर्शनीयाँ आयोजित की हैं। 1968 से अब तक अनेकों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लिया है। वर्तमान में आपके काम ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहचान बना रखी है। अतः यह आसानी से स्पष्ट हो गया की आपने भारतीय ग्राफिक कला के क्षेत्र में प्रमुख रूप से योगदान दिया है।

निष्कर्ष

आधुनिक जमाने के इस दौड में ग्राफिक कलाकारों ने अपनी कलाभिव्यक्ति का चिंतन कर अपने सौन्दयपूर्ण विचारों को अपनी पूर्ण लगन के साथ प्रस्तुत कर नई-नई शैलियों में उभार कर अपनी कला को सम्पूर्ण अभिव्यक्ति देने में जुटे हुए है। कलाकार प्राचीन विषयगत बन्धनों से मुक्त होकर नवीनतम आधार व सतहों का प्रयोग करके निरन्तर बदलाव में नवीनता लाने का प्रयास कर रहे है, अनुपम सूद ऐसे ही कई प्रकार के माध्यमों का प्रयोग कर अपने कार्य को विकसित करने में लगी रही है। वर्तमान समय में उनकी कलाकृति आधुनिकता का परिचय देने में सफल रही है।

कला के शुरूआती दौर से देखे तो यह बात तो पूर्ण स्पष्ट हो गई कि कलाकार अपने आस-पास के दृश्य जगत को प्राथमिकता देकर उसे चित्रित करता आया है। कला के क्षेत्र में भारतीय कलाकारों को खूब सफलता प्राप्त हुई, जहाँ कलाकारों के दृश्य यथार्थ के भीतर छुपे वस्तुनिरपेक्ष गुणधर्मो को पहचान कर उनके सौन्दर्य को स्वीकारा है। वहीं अनुपम सूद ने अधिकतर सामाजिक जीवन को चित्रित किया है, परन्तु उन्होने सामाजिक जीवन के साथ अन्य प्रयोग करके कलाकृतियों में अपनी काल्पनिक अभिव्यक्ति को प्रमुख स्थान देकर चित्रण किया है। इनकी कला आधुनिक कला के क्षेत्र में विशेष स्थान रखती है। उनकी कला ने केवल भारत में ही नही, बल्की विदेशों में भी अपनी पहचान बनाई और सफलता हासिल की हैं। आपने नये कलाकारों को सृजनात्मकता के क्षेत्र में नवीन रास्ते दिखाऐ, जिससे नये कलाकार आपकी कला से प्रभावित होकर स्वतंत्र रूप से सजृन कर रहे है।

सन्दर्भ सूची

1. *Contemporary women printmakers in India to know now*
2. *समकालीन कला पत्रिका ,अंक नवम्बर 1985, राष्ट्रीय ललित कला अकादमी की पत्रिका, नई दिल्ली*
3. *कुमार, डॉ. सुनील . भारतीय छापाकला, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 2000, पृ- सं- - 12*
4. *कुमार, डॉ. सुनील . भारतीय छापाकला, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 2000, पृ- सं- - 15*
5. *सिन्हा, गायत्री . प्रिंट में ट्रांजिशन, पैलेट आर्ट गैलरी प्रकाशन, 2007, पृ- सं- - 7*
6. *झावेरी, अमृता . ए गाइड टू101 मॉडर्न एंड कंटेम्परेरी इंडियन आर्टिस्ट्स, इण्डिया बुक हाउस, जयपुर, 2005, पृ- सं- - 89*
7. *सिंह, रेणु . भारत में ग्राफिक के पचास वर्ष, समकालीन कलाकारों का योगदान, 2002, पृ. सं -119 1. ¼ (URL-http://hdl.handle.net/10603/264629)*
8. *website-alchetron.com*
9. *वर्मा, कैलाश . अनुपम सूद, समकालीन कला पत्रिका, नई दिल्ली, अंक-5*
10. *कुमार, डॉ. सुनील रू भारतीय छापाकला, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 2000, पृ- सं- - 94*
11. *website 'Latitude-28 'URL-http://www.latitude28.com/index.php/artists/artistdetail/106/about*